

‘ओपन डेटा’ सप्ताह

चर्चा में क्यों?

हाल ही में आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय (MoHUA) ने ओपन डेटा अपनाने को प्रोत्साहित करने और भारत के शहरी पारिस्थितिकी तंत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के लिये ‘ओपन डेटा’ सप्ताह शुरू करने की घोषणा की है।

- यह जनवरी के तीसरे सप्ताह के दौरान यानी 17 जनवरी, 2022 से 21 जनवरी, 2022 तक आयोजित किया जा रहा है।
- इसका उद्देश्य एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जो जटिल शहरी मुद्दों, जैसे किकोवडि -19 महामारी को संबोधित करने हेतु डेटा के उपयोग और प्रचार को बढ़ावा देने के लिये पर्याप्त अवसर प्रदान करता हो।

प्रमुख बिंदु

■ ओपन डेटा के वषिय में:

- ‘ओपन डेटा’ वह डेटा है, जिससे किसी के द्वारा स्वतंत्र रूप से उपयोग, पुनः उपयोग और पुनर्वितरित किया जा सकता है। इसे तीन व्यापक श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है:
 - **उपलब्धता और पहुँच:** यह न्यूनतम लागत पर आसानी से उपलब्ध होता है और यह प्रयोग करने योग्य रूप में भी उपलब्ध होना चाहिये।
 - **पुनः उपयोग और पुनर्वितरण:** यह पुनः उपयोग और पुनर्वितरण पर बना किसी प्रतबंध के उपलब्ध कराया जाता है।
 - **सार्वभौम भागीदारी:** कोई भी या हर कोई इसका उपयोग कर सकता है और/या इसका पुनः उपयोग भी कर सकता है। किसी भी मानदंड के आधार पर किसी व्यक्ति या समूह के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये।

■ शहरी नयोजन में ओपन डेटा के लाभ:

- **पारदर्शिता:** सार्वजनिक क्षेत्र में अधिक पारदर्शिता और अखंडता। यह सार्वजनिक धन के प्रवाह और बाज़ार अंतरदृष्टि को ट्रैक करने की संभावना को बढ़ाता है।
- **बहु-आयामी सहसंबंध:** यह वर्तमान और ऐतिहासिक प्रवृत्तियों को प्रकाशित करता है जिससे सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय जलवायु की जानकारी के साथ जोड़ा जा सकता है।
- **करिया-उन्मुख दृष्टिकोण:** यह वास्तविक समय में परिवर्तनों को पहचानने, प्रतिक्रिया करने या यहाँ तक कि भविष्यवाणी करने की क्षमता प्रदान करता है।
 - मॉडलिंग और समिलेशन के माध्यम से विभिन्न प्रकार के परिवर्तन के प्रभाव का अनुमान और उपलब्ध डेटा की मात्रा के आधार पर उच्च सटीकता के साथ पूर्वानुमानों का परीक्षण करने की क्षमता।
 - अक्षम या अप्रभावी प्रथाओं की आसान पहचान की अनुमति देकर प्रक्रियाओं और सेवाओं को सुव्यवस्थित करके उत्पादकता में वृद्धि करना।
- **पर्यावरणीय स्थिरता:** अपने स्रोतों की पहचान को सरल बनाकर तथा मौजूदा परियोजनाओं, सेवाओं और बुनियादी ढाँचे के पर्यावरणीय नयियों के अनुपालन में सहायता करके पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना।
- **अनुरूप समाधान:** समान समस्याओं को विभिन्न कानूनी ढाँचे और विभिन्न जनसांख्यिकी में संबोधित करने की अनुमति देना।
- **डेटा का लोकतंत्रीकरण:** यह सूचना को औसत अंतर्-उपयोगकर्ता तक पहुँचाने की अनुमति देगा।
 - यह मूल्यों और कार्यों के एक पद्धतगित ढाँचे का वर्णन करता है जो लोगो या वशिष्ट उपयोगकर्ताओं के किसी भी नुकसान को कम करने में सक्षम है।

आगे की राह

- **कॉन्टैक्टलेस इन्फ्रास्ट्रक्चर का लाभ:** भारतीयों के पास बड़े पैमाने पर डेटा की कमी के कारण एक स्केलेबल मॉडल हेतु बलिडिंग ब्लॉक्स तेजी से अपने डिजिटल पदचिह्न का वस्तुतः कर रहे हैं-खासकर कोवडि- 19 के बाद।
 - भारत पहले से मौजूद संपर्क रहित व्यवहार का लाभ उठा सकता है।
 - **आधार** ने भारत में 1 अरब से अधिक लोगों को एक वशिष्ट पहचान प्रदान की है।
 - वित्तीय लेन-देन को एक नई परिभाषा देने के लिये **एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस** जैसे अंतर-संचालित भुगतान तंत्र।
- **व्यक्तगत डेटा के उपयोग के लिये सहमति:** एक ऐसे कानूनी ढाँचे की आवश्यकता है जो डेटा गोपनीयता सुरक्षा प्रदान करे और इस तरह शासन

को डेटा लोकतांत्रिकरण की ओर ले जाए।

- इस संदर्भ में डेटा प्राइवैसी के लिये गठित **जस्टिस बीएन शरीकृष्णा समिति** की सफ़ारिशें बेहद महत्त्वपूर्ण हैं।
- ऐसा कानून भारत के डिजिटल भवषिय को परभाषति करने में बहुत महत्त्वपूर्ण है, जो व्यक्ति पर केंद्रित हो।

स्रोत-पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/open-data-week>

